१२. सच का सौदा

–सुदर्शन

श्रवणीय

ईश्वरचंद्र विदयासागर जी की किसी कथा पर संवाद तैयार करके कक्षा में सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से कहानी का नाम पूछें । ● कहानी के पात्रों के नाम बताने के लिए कहें ।
● इसी कहानी को क्यों चुना इसका कारण जानें । ● संवाद प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

विद्‌यार्थी परीक्षा में फेल होकर रोते हैं, सर्वदयाल पास होकर रोए । जब तक पढ़ते थे, तब तक कोई चिंता नहीं थी; खाते थे; दूध पीते थे । अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते, तड़क-भड़क से रहते थे । उनके मामा एक ऊँचे पद पर नियुक्त थे। उन्होंने चार वर्ष का खर्च देना स्वीकार किया परंतु यह भी साथ ही कह दिया– ‘‘देखो, रुपया लहू बहाकर मिलता है । मैं वृद्‌ध हूँ, जान मारकर चार पैसे कमाता हूँ ।’’

सर्वदयाल ने वृद्‌ध मामा की बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा। सर्वदयाल बी.ए. की डिग्री लेकर घर को चले । जब तक पढ़ते थे सैकड़ों नौकरियाँ दिखाई देती थीं । परंतु पास हुए, तो कोई ठिकाना न दीख पड़ा ।

दोपहर का समय था, सर्वदयाल अखबार में ‘वान्टेड’ (wanted) देख रहे थे । एकाएक एक विज्ञापन देखकर उनका हृदय धड़कने लगा । अंबाले के प्रसिद्‌ध रईस रायबहादुर हनुमंतराय सिंह एक मासिक पत्र ‘रफ़ीक हिंद’ के नाम से निकालने वाले थे । उनको उसके लिए एक संपादक की आवश्यकता थी । वेतन पाँच सौ रुपये मासिक। सर्वदयाल बैठे थे, खड़े हो गए और सोचने लगे– ‘‘यदि यह नौकरी मिल जाए तो द्ररिद्रता कट जाए । मैं हर प्रकार से इसके योग्य हूँ ।’’ कंपित कर से प्रार्थना-पत्र लिखा और रजिस्ट्री करा दिया परंतु बाद में सोचा– व्यर्थ खर्च किया । मैं साधारण ग्रेजुएट हूँ, मुझे कौन पूछेगा ? पाँच सौ रुपया तनखाह है, सैकड़ों उम्मीदवार होंगे और एक से एक बढ़कर । इन्हीं विचारों में कुछ दिन बीत गए । कभी आशा कल्पनाओं की झड़ी बाँध देती थी, कभी निराशा हृदय में अंधकार भर देती थी । पंद्रह दिन बीत गए, परंतु कोई उत्तर न आया ।

जब तीसरा सप्ताह भी बीत गया और कोई उत्तर न आया तो सर्वदयाल निराश हो गए और समझ गए कि वह मेरी भूल थी । इतने ही में तार के चपरासी ने पुकारा । सर्वदयाल का दिल उछलने लगा । जीवन के भविष्य में आशा की लता दिखाई दी । लपके-लपके दरवाजे पर गए, और तार देखकर उछल पड़े। लिखा था– ‘‘स्वीकार है, आ जाओ ।’’

हृदय आनंद से गद्‌गद हो रहा था और मन में सैकड़ों विचार उठ रहे थे । पत्र-संपादन उनके लिए जातीय सेवा का उपयुक्त साधन था । सोचते थे– ‘‘यह मेरा सौभाग्य है, जो ऐसा अवसर मिला । बैग में कागज और

परिचय

जन्म : १८९६ सियालकोट (अविभाजित भारत)
मृत्यु : १९६७
परिचय : आपका मूल नाम पं. बद्रीनाथ भट्‌ट था । गद्‌य-पद्‌य पर समान अधिकार रखने वाले सुदर्शन जी का दृष्टिकोण सुधारवादी एवं आदर्शवादी है । ‘तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा’ और ‘बाबा मन की आँखें खोल’ आपके प्रसिद्‌ध गीत हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : भागवंती (उपन्यास) हार की जीत, पत्थरों का सौदागर, साइकिल की सवारी आदि कहानियाँ सुदर्शन सुधा, सुदर्शन सुमन, गल्पभंडारी, सुप्रभात, पनघट (कहानी संग्रह) ऑनरेरी (प्रहसन)

गद्‌य संबंधी

चरित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही एवं चरित्रपूर्ण वर्णन चरित्रात्मक कहानी है ।

प्रस्तुत चरित्रात्मक कहानी में सुदर्शन जी ने स्वाभिमान से जीने, परिस्थितियों के सामने डटे रहने और सिद्‌धांतों से समझौता न करने की बात की है । आपका मानना है कि सत्य हमेशा विजयी होता है ।

पेंसिल निकालकर पत्र की व्यवस्था ठीक करने लगे। पहले पृष्ठ पर क्या हो? संपादकीय वक्तव्य कहाँ दिए जाएँ? सार और सूचना के लिए कौन-सा स्थान उपयुक्त होगा? 'टाइटिल' का स्वरूप कैसा हो? संपादक का नाम कहाँ रहे? इन सब बातों को सोच-सोचकर लिखते गए। एकाएक विचार आया- कविता के लिए कोई स्थान न रक्खा, और कविता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे पत्र की शोभा बढ़ जाती है। जिस प्रकार भोजन के साथ चटनी एक विशेष स्वाद देती है, उसी प्रकार विद्‌वत्तापूर्ण लेख और गंभीर विचारों के साथ कविता एक आवश्यक वस्तु है। उसे लोग रुचि से पढ़ते हैं। सर्वदयाल को निश्चय हो गया कि इसके बिना पत्र को सफलता न होगी।

सर्वदयाल बैठे थे। खड़े हो गए और पत्र के तैयार किए हुए नोट गद्‌दे पर रखकर इधर-उधर टहलने लगे । फिर बैठकर काग़ज पर सुंदर अक्षरों में लिखा- पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद' , अंबाला ।

वे संपादन के स्वप्न देखा करते थे। अब आशा की हरी-हरी भूमि सामने आई तो उनके कानों में वहीं शब्द जो उस काग़ज पर लिखे थे:-

पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला ।

देर तक इसी धुन और आनंद में मग्न रहने के पश्चात पता नहीं कितने बजे उन्हें नींद आई परंतु आँखें खुलीं तो दिन चढ़ चुका था और गाड़ी अंबाला स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। इतने में एक नवयुवक ने पास आकर पूछा-''क्या आप रावलपिंडी से आ रहे हैं ?''

''हाँ, मैं वहीं से आ रहा हूँ। तुम किसे पूछते हो ?''

''ठाकुर साहब ने गाड़ी भेजी है ।''

सर्वदयाल का हृदय कमल की नाई खिल गया। आज तक कभी बग्घी में न बैठे थे। उचक कर सवार हो गए और आस-पास देखने लगे । गाड़ी चली और एक आलीशान कोठी के हाते में जाकर रुक गई । सर्वदयाल का हृदय धड़कने लगा। कोचवान ने दरवाजा खोला और आदर से एक तरफ खड़ा हो गया। सर्वदयाल रूमाल से मुँह पोंछते हुए नीचे उतरे और बोले- ''ठाकुर साहब किधर हैं ?''

कोचवान ने उत्तर में एक मुंशी को पुकारकर बुलाया और कहा, ''बाबू साहब रावलपिंडी से आए हैं। ठाकुर साहब के पास ले जाओ ।''

''रफ़ीक हिंद'' के खर्च का ब्योरा इसी मुंशी ने तैयार किया था, इसलिए तुरंत समझ गया कि यह पंडित सर्वदयाल हैं, जो 'रफ़ीक हिंद' संपादन के लिए चुने गए हैं । आदर से बोला-''आइए साहब !''

पंडित सर्वदयाल मुंशी के पीछे चले । मुंशी एक कमरे के आगे रुक गए और रेशमी पर्दा उठाकर बोले- ''चलिए, ठाकुर साहब बैठे हैं !''

ठाकुर हनुमंतराय सिंह तीस-बत्तीस वर्ष के सुंदर नवयुवक थे ।

संभाषणीय

मराठी भाषा के प्रसिद्‌ध कवि कुसुमाग्रज लिखित 'कणा' कविता सुनाइए और उसका अर्थ बताइए ।

आसपास

कैरियर से संबंधित विविध जानकारी प्राप्त कीजिए और क्षेत्रानुसार सूची बनाइए ।

मुस्कराते हुए आगे बढ़े और बड़े आदर से सर्वदयाल से हाथ मिलाकर बोले– ''आप आ गए। कहिए, राह में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ।''

सर्वदयाल ने धड़कते हुए हृदय से उत्तर दिया, ''जी नहीं ।''

''आपके लेख बहुत समय से देख रहा हूँ । ईश्वर की बड़ी कृपा है जो आज दर्शन भी हुए । निस्संदेह आपकी लेखनी में आश्चर्यमयी शक्ति है ।''

सर्वदयाल पानी-पानी हो गए। अपनी प्रशंसा सुनकर उनके हर्ष का पारावार न रहा, तो भी सँभलकर बोले– ''यह आप की कृपा है ?''

ठाकुर साहब ने गंभीरता से कहा – ''यह नम्रता आपकी योग्यता के अनुकूल है परंतु मेरी सम्मति में आप सरीखा लेखक पंजाब भर में नहीं । 'रफ़ीक हिंद' का सौभाग्य है कि आप-सा संपादक उसे प्राप्त हुआ ।''

सर्वदयाल के हृदय में जो आशंका हो रही थी, वह दूर हो गई। समझे, मैदान मार लिया। वे बात का रुख बदलने को बोले– ''पत्रिका कब से निकलेगी ?'' ठाकुर साहब ने हँसकर उत्तर दिया– ''यह प्रश्न मुझे आप से करना चाहिए था।''

✻ उस दिन १५ फरवरी थी। सर्वदयाल सोचकर बोले –''पहला अंक पहली अप्रैल को निकल जाए ?'' ठाकुर साहब ने कहा ''परंतु इतने थोड़े समय में लेख मिल जाएँगे या नहीं, इस बात का विचार आप कर लीजिएगा ।'' ''इसकी चिंता न कीजिए, मैं आज से ही काम आरंभ किए देता हूँ । परमात्मा ने चाहा, तो आप पहले ही अंक को देखकर प्रसन्न हो जाएँगे ।'' सर्वदयाल बोल पड़े

अप्रैल की पहली तारीख को 'रफ़ीक हिंद' का प्रथम अंक निकला तो पंजाब के पढ़े-लिखे लोगों में शोर मच गया और पंडित सर्वदयाल के नाम की चर्चा होने लगी। उनके लेख लोगों ने पहले भी पढ़े थे, परंतु 'रफ़ीक हिंद' के प्रथम अंक ने तो उनको देश के प्रथम श्रेणी के संपादकों की पंक्ति में ला बिठाया । पत्र क्या था, सुंदर और सुगंधित फूलों का गुच्छा था, जिसकी एक-एक कुसुम-कलिका चटक-चटक कर अपनी मोहिनी वासना से पाठकों के मनों को मुग्ध कर रही थी । एक समाचारपत्र ने समालोचना करते हुए लिखा– ''रफ़ीक हिंद'' का प्रथम अंक प्रकाशित हो गया है ऐसी शान से कि देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है । ✻

ठाकुर हनुमंतराय सिंह ने ये समालोचनाएँ देखीं तो हर्ष से उछल पड़े । वह मोटर में बैठकर 'रफ़ीक हिंद' के कार्यालय में गए और पंडित सर्वदयाल को बधाई देकर बोले ''मुझे यह आशा न थी कि हमें इतनी सफलता हो सकेगी ।''

पं.सर्वदयाल ने उत्तर दिया– ''मेरे विचार में यह कोई बड़ी सफलता नहीं ।'' ठाकुर साहब ने कहा– ''आप कहें परंतु स्मरण रखिए, वह दिन दूर नहीं जब अखबारी दुनिया आपको पंजाब का शिरोमणि स्वीकार करेगी ।''

भा. कि. खडसे लिखित 'सत्य की विजय' कहानी पढ़िए ।

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) लिखिए :

'रफीक हिंद' का पहले अंक का परिणाम

१)......... २).........

३)......... ४).........

(२) गद्‌यांश में प्रयुक्त लेखन, प्रकाशन से संबंधित शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए :

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
फूल	झुंड
पशु-पक्षी	पुंज
बच्चे	गुच्छा
तारें	टोली

(४) 'अगर मैं समाचार पत्र का संपादक होता तो ...' स्वमत लिखिए ।

इसी प्रकार एक वर्ष बीत गया 'रफ़ीक हिंद' की कीर्ति देश भर में फैल गई, और पंडित सर्वदयाल की गिनती बड़े आदमियों में होने लगी थी। उन्हें जीवन एक आनंदमय यात्रा प्रतीत होता था कि इतने में भाग्य ने पाँसा पलट दिया ।

अंबाला की म्युनिस्पैलिटी के मेंबर चुनने का समय समीप आया, तो ठाकुर हनुमंतराय सिंह भी एक पक्ष की ओर से मेंबरी के लिए प्रयत्न करने लगे। अमीर पुरुष थे, रुपया-पैसा पानी की तरह बहाने को उद्‌यत हो गए। उनके मुकाबले में लाला हशमतराय खड़े हुए। हाइस्कूल के हेडमास्टर, वेतन थोड़ा लेते थे कपड़ा साधारण पहनते थे। कोठी में नहीं वरन् नगर की एक गली में उनका आवास था परंतु जाति की सेवा के लिए हर समय उद्‌यत रहते थे।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह, जातीय सेवा के अभिलाषी तो थे परंतु उनके वचन और कर्म में बड़ा अंतर था।

रविवार के दिन पंडित सर्वदयाल का भाषण सुनने के लिए सहस्त्रों लोग एकत्र हो रहे थे। विज्ञापन में व्याख्यान का विषय 'म्युनिसिपल इलेक्शन' था । पंडित सर्वदयाल क्या कहते हैं, यह जानने के लिए लोग अधीर हो रहे थे । लोगों की आँखें इस ताक में थी कि देखें पंडित जी सत्य को अपनाते हैं या झूठ की ओर झुकते हैं ? न्याय का पक्ष लेते हैं, या रुपये का ? इतने में पंडित जी प्लेटफॉर्म पर आए। हाथों ने तालियों से स्वागत किया । कान प्लेटफार्म की ओर लगाकर सुनने लगे। पंडित जी ने कहा-

''मैं यह नहीं कहता कि आप अमुक मनुष्य को अपना वोट दें । किंतु इतना अवश्य कहता हूँ कि जो कुछ करें, समझ-सोचकर करें ।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह को पूरा-पूरा विश्वास था कि पंडित जी उनके पक्ष में बोलेंगे परंतु व्याख्यान सुनकर उनके तन में आग लग गई । कुछ मनुष्य ऐसे भी थे, जो पंडित जी की लोकप्रियता देखकर उनसे जलते थे । उन्हें मौका मिल गया, ठाकुर साहब के पास जाकर बोले- ''यह बात क्या है, जो वह आपका अन्न खाकर आप ही के विरुद्‌ध बोलने लग गया ?''

ठाकुर साहब ने उत्तर दिया- ''मैंने उसके साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं किया । जाने उसके मन में क्या समाई है ?''

वे इसके लिए पहले ही से तैयार थे । उनके आने पर ठाकुर साहब ने कहा- ''क्यों पंडित जी! मैंने क्या अपराध किया है ?''

पंडित सर्वदयाल का हृदय धड़कने लगा परंतु साहस से बोले- ''मैंने कब कहा है कि आपने कोई अपराध किया है ?''

''तो इस भाषण का क्या मतलब है ?''

'' यह प्रश्न सिद्‌धांत का है ।''

'' तो मेरे विरुद्‌ध व्याख्यान देंगे आप ?''

मौलिक सृजन

''सत्यमेव जयते'' इस विचार को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए

पंडित सर्वदयाल ने भूमि की ओर देखते हुए उत्तर दिया– ''मैं आपकी अपेक्षा लाला हशमतराय को मेंबरी के लिए अधिक उपयुक्त समझता हूँ ।''

'' यह सौदा आपको बहुत महँगा पड़ेगा ।

पंडित सर्वदयाल ने सिर ऊँचा उठाकर उत्तर दिया– ''मैं इसके लिए सब कुछ देने को तैयार हूँ ।''

ठाकुर साहब इस साहस को देखकर दंग रह गए और बोले– ''नौकरी और प्रतिष्ठा भी ?''

'' हाँ, नौकरी और प्रतिष्ठा भी ।''

'' उस, तुच्छ, उद्धत, कल के छोकरे हशमतराय के लिए ?''

'' नहीं, सच्चाई के लिए ।''

ठाकुर साहब को ख्याल न था कि बात बढ़ जाएगी, न उनका यह विचार था कि इस विषय को इतनी दूर ले जाएँ। परंतु जब बात बढ़ गई तो पीछे न हट सके, गरजकर बोले– ''यह सच्चाई यहाँ न निभेगी । क्या तुम समझते हो कि इन भाषणों से मैं मेंबर न बन सकूँगा ?''

'' नहीं,यह बात तो नहीं समझता ।''

'' तो फिर तुम अकड़ते किस बात पर हो ?''

'' यह मेरा कर्तव्य है। उसे पूरा करना मेरा धर्म है ।'' फल परमेश्वर के हाथ में है ।''

ठाकुर साहब ने मुँह मोड़ लिया। पंडित सर्वदयाल ताँगे पर जा बैठे और कोचवान से बोले– ''चलो ।''

इसके दूसरे दिन पंडित सर्वदयाल ने त्यागपत्र भेज दिया ।

संसार की गति विचित्र है। जिस सच्चाई ने उन्हें एक दिन सुख-संपति के दिन दिखाए थे, उसी सच्चाई के कारण नौकरी करते समय पंडित सर्वदयाल प्रसन्न हुए थे। छोड़ते समय उससे भी अधिक प्रसन्न हुए ।

परंतु लाला हशमतराम ने यह समाचार सुने तो अवाक रह गए ।

वह भागे-भागे पंडित सर्वदयाल के पास जाकर बोले– ''भाई, मैंने मेंबरी छोड़ी, तुम अपना त्यागपत्र लौटा लो ।''

पंडित सर्वदयाल के मुख-मंडल पर एक अपूर्व तेज की आभा दमकने लगी,जो इस मायावी संसार में कहीं-कहीं ही देख पड़ती है। उन्होंने धैर्य और दृढ़ता से उत्तर दिया– ''यह असंभव है ।''

'' क्या मेरी मेंबरी का इतना ही खयाल है ?''

'' नहीं, यह सिद्धांत का प्रश्न है ।''

उन्होंने पत्र खोलकर पढ़ा ऒर कहा–''मुझे पहले ही आशा थी ।''

लाला हशमतराय ने पूछा–''क्या है ? देखूँ ।''

'' त्यागपत्र स्वीकार हो गया ।''

ठाकुर हनुमंतराय सिंह ने सोचा, यदि अब भी सफलता न हुई, तो नाक

लेखनीय

अपने विद्यालय में मनाए गए ''वाचन प्रेरणा दिवस'' कार्यक्रम का वृत्तांत लिखिए ।

कट जाएगी । धनवान पुरुष थे, थैली का मुँह खोल दिया ।

परंतु लाला हशमतराय की ओर से न तो ताँगा दौड़ता था, न लड्डू बँटते थे । हाँ दो चार सभाएँ अवश्य हुईं, जिनमें पंडित सर्वदयाल ने धाराप्रवाह व्याख्यान दिए, इलेक्शन का दिन आ पहुँचा । ठाकुर हनुमंतराय सिंह और लाला हशमतराय दोनों के हृदय धड़कने लगे, जिस प्रकार परीक्षा का परिणाम निकलते समय विद्यार्थी अधीर हो जाते हैं। दोपहर का समय था, पर्चियों की गिनती हो रही थी । ठाकुर हनुमंतराय के आदमी फूलों की मालाएँ, विक्टोरिया बैंड और आतशबाजी के गोले लेकर आए थे । उनको पूरा-पूरा विश्वास था कि ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे परिणाम निकला, तो उनकी तैयारियाँ धरी-धराई रह गईं । लाला हशमतराय के वोट अधिक थे ।

इसके पंद्रहवें दिन पंड़ित सर्वदयाल रावलपिंडी को रवाना हुए ।

कैसी शोकजनक और हृदयद्रावी घटना है कि जिसकी योग्यता पर समाचार पत्रों के लेख निकलते हों, जिसकी वक्तृताओं पर वाग्मिता निछावर होती हो, जिसका सत्य स्वभाव अटल हो, उसको आजीविका चलाने के लिए केवल पाँच सौ रुपये की पूँजी से दुकान करनी पड़े। निस्संदेह यह सभ्य समाज का दुर्भाग्य है !

प्रातःकाल का समय था। पंडित सर्वदयाल अपनी दुकान पर बैठे 'रफ़ीक हिंद' का नवीन अंक देख रहे थे । जैसे एक माली सिरतोड़ परिश्रम से फूलों की क्यारियाँ तैयार करे, और उनको कोई दूसरा माली नष्ट कर दे ।

इतने में उनकी दुकान के सामने एक मोटरकार आकर रुकी और उसमें से ठाकुर हनुमंतराय सिंह उतरे। पंडित सर्वदयाल चौंक पड़े। ख्याल आया- ''आँखें कैसे मिलाऊँगा । एक दिन वह था कि इनमें प्रेम का वास था, परंतु आज उसी स्थान पर लज्जा का निवास है ।''

ठाकुर हनुमंतराय ने पास आकर कहा- ''अहा! पंडित जी बैठे हैं । बहुत देर के बाद दर्शन हुए। कहिए क्या हाल है ?'' पंडित सर्वदयाल ने धीरज से उत्तर दिया- ''अच्छा है। परमात्मा की कृपा है।''

'' यह दुकान अपनी है क्या ?''

'' जी हाँ ।''

'' कब खोली ?''

'' आठ मास के लगभग हुए हैं ।''

ठाकुर साहब ने उनको चुभती हुई दृष्टि से देखा और कहा- ''यह काम आपकी योग्यता के अनुकूल नहीं है ।'' पंडित सर्वदयाल ने बेपरवाही से उत्तर किया- ''संसार में बहुत से मनुष्य ऐसे हैं, जिनको वह करना पड़ता हैं, जो उनके योग्य नहीं होता। मैं भी उनमें से एक हूँ ।''

''आमदनी अच्छी हो जाती है ?''

पंडित सर्वदयाल अभी तक यही समझे हुए थे कि ठाकुर साहब मुझे जलाने के लिए आए हैं परंतु इन शब्दों से उनकी शंका दूर हो गई। अंधकार-

आवृत्त आकाश में किरण चमक उठी । उन्होंने ठाकुर साहब के मुख की ओर देखा । वहाँ धीरता, प्रेम और लज्जा तथा पश्चात्ताप का रंग झलकता था। आशा ने निश्चय का स्थान लिया । सकुचाए हुए बोले– ‘‘यह आपकी कृपा है ! मैं तो ऐसा नहीं समझता।’’

ठाकुर साहब अब न रह सके । उन्होंने पंडित सर्वदयाल को गले से लगा लिया और कहा– ‘‘मैंने तुम पर बहुत अन्याय किया है। मुझे क्षमा कर दो । ‘रफ़ीक हिंद’ को सँभालो, आज से मैं तुम्हें छोटा भाई समझता हूँ । परमात्मा करे तुम पहले की तरह सच्चे, विश्वासी, न्यायप्रिय और दृढ़ बने रहो, मेरी यही कामना है ।’’

पंडित सर्वदयाल अवाक् रह गए। वे समझ न सके कि ये सच है । सचमुच ही भाग्य ने फिर पल्टा खाया है। आश्चर्य से ठाकुर साहब की और देखने लगे । ठाकुर साहब ने कथन को जारी रखते हुए कहा– ‘‘उस दिन तुमने मेरी बात रद्द कर दी लेकिन आज यह न होगा। तुम्हारी दुकान पर बैठा हूँ, जब तक हाँ न कहोगे तब तक यहाँ से नहीं हिलूँगा ।’’

पंडित सर्वदयाल की आँखों में आँसू झलकने लगे । गर्व ने गर्दन झुका दी । तब ठाकुर साहब ने सौ–सौ के दस नोट बटुए में से निकाल कर उनके हाथ में दिए और कहा– ‘‘यह तुम्हारे साहस का पुरस्कार है । तुम्हें इसे स्वीकार करना होगा ।’’ पंडित सर्वदयाल अस्वीकार न कर सके । ठाकुर हनुमंतराय जब मोटर में बैठे तो पुलकित नेत्रों में आनंद का नीर झलकता था, मानो कोई निधि हाथ लग गई हो।

—०—

शब्द संसार

उद्‌यत (वि.सं.) = उग्र, प्रचंड
वाग्मिता (पुं.सं.) =अच्छा वक्ता, विद्‌वान
आवृत्त (वि.) = घिरा हुआ, ढँका हुआ

मुहावरे
गदगद होना = अत्यंत प्रसन्न होना
पाँसा पलटना = विपरीत होना
अवाक होना = अचंभित होना

पाठ से आगे

विविध राज्यों में प्रकाशित होने वाली हिंदी साहित्य की पत्रिकाओं की जानकारी नीचे दिए गए मुद्दों के आधार पर लिखिए ।

नाम — राज्य — प्रकाशक

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल :

यातायात के साधन

(ख) पाठ्‌यपुस्तक के पाठ से बीस विशेष शब्द ढूँढ़कर लिखिए ।

(२) ‘‘कोई और काम कर लूँगा, परंतु सच्चाई को न छोड़ूँगा ।’’ पंडित सर्वदयाल जी के इस वाक्य से उनके व्यक्तित्व का परिचय दीजिए ।

7YPG3G

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) विज्ञापन पढ़िए और शब्द युग्म ढूँढ़कर लिखिए :

खुश खबर ! खुश खबर !! खुश खबर !!!

हस्तकला वस्तुओं की प्रदर्शनी

भारत के विविध राज्यों में हाथों से बनाई गई वस्तुओं की भव्य प्रदर्शनी आपके शहर में !

कालावधि : २० अक्तूबर २०१७ से ३० अक्तूबर २०१७

समय : सुबह ११=०० से रात ९=०० तक

स्थान : गणेश कला क्रीड़ा मंदिर, पुणे

खरीदारी पर आकर्षक छूट !

साथ-ही-साथ विविध राज्यों के खाद्य व्यंजनों के ठेले

(स्टॉल्स्) (गाँव-शहर के छोटे-बड़े, बाल-वृद्ध, महिला-पुरुष सभी घूमते-फिरते, हँसते-हँसते, खान-पान का स्वाद ले सकते हैं ।)

प्रवेश : निःशुल्क

(२) निम्न विषयों पर आकर्षक विज्ञापन बनाइए :

विषय : (१) खेल सामग्री की दुकान (२) चित्रकला प्रदर्शनी (३) अंतरराज्यीय कबड्डी प्रतियोगिता

(३) समाचार पत्र में छपवाने के लिए विज्ञापन बनाइए ।

१. नियुक्ति के लिए =लिपिक, DTP ऑपरेटर, शिक्षक, ड्राइवर ।